प्रथम अध्याय

प्रस्तावना

1.1 भूमिकाः

भारतीय साहित्य का भंडार अनेक महान साहित्यकारों के योगदान के परिणामस्वरूप समृद्धशाली है। इन्हीं प्रतिष्ठित साहित्यकारों में विद्यापति (1360 ई.-1448 ई.) और शंकरदेव (1449 ई.-1568 ई.) क्रमशः हिन्दी और असमीया साहित्य संसार के दो प्रमुख हस्ताक्षर हैं। साहित्यिक प्रतिभा के साथ-साथ सांस्कृतिक और सामाजिक जनजीवन में भी विद्यापति और शंकरदेव की प्रमुख भूमिका रही है। हिन्दी साहित्य के इतिहास में विद्यापति एक ऐसे अनोखे व्यक्तित्व के रूप में प्रतिष्ठित हुए, जो मिथिलांचल के लोकमानस में आज भी निरंतर बने हुए हैं। विद्यापति की लोकप्रियता केवल मिथिलांचल में ही नहीं, अपितु संपूर्ण हिन्दी भाषी क्षेत्र तथा पूरे भारत में व्याप्त रही है। विद्यापति हिन्दी साहित्य के आदिकाल और भक्तिकाल के संधिकाल अर्थात् संक्रमण काल के कवि के रूप में जाने जाते हैं। विद्यापति की अधिकतर रचनाएँ संस्कृत में ही हैं, किंतु साथ ही अवहट्ट और मैथिली भाषा में रचित रचनाओं का मानदण्ड भी समान ही है। अभिप्राय यह है कि संस्कृत, अवहट्ट और मैथिली भाषा पर उनका समान अधिकार था। निश्चय ही विद्यापति की सभी रचनाओं का अपना-अपना महत्त्व है; किंतु मैथिली भाषा में रचित 'पदावली' उनकी श्रेष्ठतम कृति के रूप में सर्वमान्य है। विद्यापति की लोकप्रियता का मुख्य कारण पदावली ही है, जो हिन्दी साहित्य संसार के लिए अमूल्य धरोहर है। यह पदावली शृंगार रस से प्लावित और पल्लवित है। शृंगार के अतिरिक्त इसमें भक्ति रस का भी चित्रण स्थान-स्थान पर मिलता है।

असमीया नव-वैष्णव धर्म के उन्नायक तथा प्रचारक शंकरदेव बहुमुखी प्रतिभा के धनी तथा असाधारण व्यक्तित्व के अधिकारी थे। वर्तमान समय में शंकरदेव को केवल असम या भारत में ही नहीं, बल्कि विश्व दरबार में मानवता के दूत का स्थान दिया जाता है। संस्कृत, ब्रजावली और असमीया में आपने रचनाएँ कीं। उनकी रचनाओं में 'कीर्तन-घोषा' को श्रेष्ठतम स्थान दिया जाता है। एकशरण हरि नाम धर्म

तथा भगवत भक्ति के प्रचार हेतु शंकरदेव ने जिन घोषा गीतों की रचना की, उन्हीं का संकलित रूप 'कीर्तन-घोषा' है। मूलतः भक्ति प्रधान इस ग्रंथ में शृंगार का भी अनुपम निदर्शन दृष्टिगोचर होता है।

विद्यापति और शंकरदेव ने अनेक रचनाएँ लिखकर भारतीय साहित्य को अमूल्य योगदान दिया है। आप दोनों की प्रसिद्धि के कारण विशेष रूप से क्रमशः 'पदावली' और 'कीर्तन-घोषा' हैं। 'पदावली' और 'कीर्तन-घोषा' दोनों ही का जनजीवन के साथ गहरा सम्बंध हैं। मैथिल प्रदेश में पदावली जितना लोकप्रिय है, असमीया भक्त वत्सल जीवन में 'कीर्तन-घोषा' भी उतना ही लोकप्रिय है। विद्यापति की 'पदावली' और शंकरदेव की 'कीर्तन-घोषा' में भक्ति और शृंगार रस का अनुपम चित्रण मिलता है।

1.2 अध्ययन का महत्त्वः

प्रत्येक साहित्य सोद्देश्यपूर्ण होता है तथा प्रत्येक साहित्यकार का निजी महत्त्व होता है। साहित्य साहित्यकार के स्वतंत्र सत्ता का परिचायक होता है। हिन्दी साहित्य के संक्रमण काल के कवि विद्यापति और असमीया वैष्णव युग के उन्नायक तथा प्रचारक शंकरदेव का स्थान साहित्य संसार में अन्यतम है। विद्यापति और शंकरदेव द्वारा रचित क्रमशः 'पदावली' और 'कीर्तन-घोषा' दोनों ही कृतियों का महत्त्व भी कई दृष्टियों से है। दोनों की रचनाएँ कालजयी साहित्य हैं। प्रांतीय भाषा में रचित दोनों ही कृतियाँ अपने-अपने रचयिताओं के महत्त्वपूर्ण निदर्शन हैं। जनजीवन के साथ गहरा सम्बंध स्थापित करने वाली 'पदावली' और 'कीर्तन-घोषा' में निहित भक्ति भावना और शृंगार का तुलनात्मक अध्ययन निश्चय ही महत्त्वपूर्ण है।

1.3 अध्ययन का सीमांकनः

प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध में विद्यापति की 'पदावली' और शंकरदेव की 'कीर्तन-घोषा' की भक्ति एवं शृंगार का अध्ययन किया गया है। साथ ही दोनों साहित्यकारों के जीवन और साहित्य कर्म पर भी आलोचना की गई है।

1.4 अध्ययन का शीर्षकः

प्रस्तुत शोध का शीर्षक है- 'विद्यापति की पदावली और शंकरदेव की कीर्तन-घोषा में चित्रित भक्ति एवं श्रृंगारः एक तुलनात्मक अनुशीलन'।

1.5 अब तक हुए शोधकार्यः

मैथिल कोकिल और महापुरुष नाम से सर्वप्रसिद्ध क्रमशः विद्यापति तथा शंकरदेव भारतीय साहित्य संसार के दो प्रमुख स्तम्भ हैं। साहित्य के साथ-साथ समाज, संस्कृति तथा जनजीवन पर इन दोनों महान विभूतियों की छाप गहराई तक विद्यमान है। अतएव विद्यापति और शंकरदेव के जीवन तथा कार्यक्षेत्रों पर गवेषकों व अनुसंधानवेताओं द्वारा भिन्न रूपों में शोधकार्य होते रहे हैं। यहाँ उन्हीं शोधकार्यों का एक लेखा-जोखा निम्नलिखित रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

1.5.1 विद्यापति पर अब तक हुए शोधकार्यः

शोध का कार्यक्षेत्रः पी.एच.डी.

क्रम	वर्ष	विषय	शोधार्थी	शोध निर्देशक	विश्वविद्यालय
1.	1983	विद्यापति के काव्य में शिव और पार्वती का चिंतन	चौधुरी, रामसेवक	सिंह, प्रबोध नारायण, हिन्दी विभाग	कलकत्ता विश्वविद्यालय
2.	1990	सौंदर्यबोध के संदर्भ में विद्यापति पदावली एवं सूरसागर के दशम स्कंध का तुलनात्मक अध्ययन	बजाज, अलका	सिंघल, रामधारी, हिन्दी विभाग	पंजाब विश्वविद्यालय
3.	1994	विद्यापति की पदावली में अभिव्यक्त शृंगार एवं भक्ति	पाटिल,पी	गुणाशंकर, एस.एन, हिन्दी विभाग	कर्नाटक विश्वविद्यालय
4.	1997	शृंगार रस की दृष्टि से विद्यापति और सूरसागर का तुलनात्मक अनुशीलन	फिलिप्स, रश्मि	प्रसाद, विश्वनाथ, हिन्दी विभाग	भी.भी.एस. पूर्वांचल विश्वविद्यालय
5.	2002	विद्यापति तथा सूरदास के काव्य बिम्बों का तुलनात्मक अध्ययन	गुप्ता, त्रिवेणी	सिंहल, रामधारी, हिन्दी विभाग	पंजाब विश्वविद्यालय

6.	2003	विद्यापति एवं जयदेव के गीतिकाव्य का तुलनात्मक अनुशीलन	पांडे, आनंद	मिश्र, सभापति, हिन्दी विभाग	भी.भी.एस पूर्वांचल विश्वविद्यालय
7.	2013	संस्कृत के प्रमुख शृंगार काव्यों का विद्यापति पर प्रभाव	सिंह, प्रज्ञा	सिंह, राकेश, हिन्दी विभाग	भी.भी.एस. पूर्वांचल विश्वविद्यालय
8.	2017	महाकवि विद्यापति की रचनाओं का सांगीतिक अध्ययन	बोस, अनन्या	मलिक, पी.के, संगीत विभाग	इलाहाबाद विश्वविद्यालय

इन शोध कार्यों के अलावा भारतीय मनीषा के अनेक अनुसंधानवेताओं तथा संग्राहकों ने अपना अमूल्य योगदान देकर विद्यापति के व्यक्तित्व, कृतित्व तथा पदों का संग्रह कर उसे पुस्तक अथवा ग्रंथ का रूप प्रदान करने का सुप्रयास किया हैः

लेखक / संपादक	पुस्तक
जर्ज ग्रियर्सन	An Introduction to the Maaithili literature of North Bihar containing grammar, chiristomathy and vocabulary
डॉ. नगेंद्रनाथ गुप्त	विद्यापति पदावली
शिवनंदन ठाकुर	विद्यापति पदावली
रामवृक्ष बेनीपुरी	विद्यापति पदावली
अमरनाथ झा	विद्यापति गीत रत्नाकर
डॉ. आनंदप्रकाश दीक्षित	विद्यापति
नागार्जुन	विद्यापति के गीत, विद्यापति की कहानियाँ
डॉ. शिवप्रसाद सिंह	विद्यापति
पंडित गोविंद झा	विद्यापति गीत समग्र
अमूल्य चन्द्र बर्मण	विद्यापति काव्य का सांस्कृतिक अध्ययन

इसके अतिरिक्त बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना द्वारा तीन खण्डों में 'विद्यापति पदावली' का प्रकाशन एक बहुत ही उम्दा कार्य रहा है, जिनमें से दो का प्रकाशन संपूर्ण हो चुका है।

1.5.2. शंकरदेव पर अब तक हुए शोधकार्यः

शोध का कार्यक्षेत्रः डी.लीट

क्रम	वर्ष	विषय	शोधार्थी	शोध निर्देशक	विश्वविद्यालय
1.	1973	सूरदास और शंकरदेव के कृष्ण भक्ति कार्य का तुलनात्मक अध्ययन	कृष्ण नारायण प्रसाद 'मागध'	विनय कुमार, हिन्दी विभाग	बिहार विश्वविद्यालय

शोध का कार्यक्षेत्रः पी.एच.डी.

क्रम	वर्ष	विषय	शोधार्थी	शोध निर्देशक	विश्वविद्यालय
1.	1985	Comperative Study of the thoughts of Sankardeva and Tulsidas	Raichoudhury, Bhupendra, Dept. of Hindi	Magadh, Krishna Narayan Prasad,Dept. of Hindi	Gauhati University
2.	1994	A study of the socio ethical thoughts of Sankardeva and Madhavadev	Devi, Gayatri	Sharma, Nirmali, Dept. of Philosophy	NorthEast Hill University
3.	1996	Contribution of Srimanta Sankardeva and his associates towards education amongst the rural folk of assam	Sarma, Nripendra Nath	Das, PC, Dept. of Education	Gauhati University
4.	1997	A Comparative study of the religious concepts of Sankardeva and Nanak	Sarma, Maina	Sarma, Nilima, Dept. of Philosophy	Gauhati University
5.	2016	स्वराजोत्तर कालर शंकरदेव अध्ययन एटि विश्लेषण	बोरा, निर्माली	महंत, प्रदीपज्योति और डेका, उमेश, आधुनिक भारतीय भाषा विभाग	गैहाटी विश्वविद्यालय
6.	2017	Sankardeva and the new Vaisnavite movement in assam a philosophy	Bora, Bonti	Devi, pranita, Dept. Of Philosophy	Gauhati University

शोध का कार्यक्षेत्रः एम.फिल

क्रम	वर्ष	विषय	शोधार्थी	शोध निर्देशक	विश्वविद्यालय
1.	1984	सूरदास एवं शंकरदेव कृत भ्रमरगीतों का तुलनात्मक अध्ययन	आगरवाल, आत्माराम	सिंह, श्रीधर, हिन्दी विभाग	गौहाटी विश्वविद्यालय
2.	1986	उमापति और शंकरदेव कृत पारिजात हरण नाटक का तुलनात्मक अध्ययन	कलिता, धनेश्वर	तिवारी, हीरालाल, हिन्दी विभाग	गौहाटी विश्वविद्यालय
3.	1987	सूरदास कृत सुरसागर और शंकरदेव कृत असमीया भागवत के कृष्ण का तुलनात्मक अध्ययन	शइकीया, गुणेश्वर	सिंह, श्रीधर, हिन्दी विभाग	गौहाटी विश्वविद्यालय

इन शोध कार्यों के अलावा असम के कई उल्लेखनीय व्यक्तियों ने शंकरदेव तथा उनके साहित्य को संजोकर ग्रंथ अथवा पुस्तक रूप में प्रकाशित किया हैं। जो इस प्रकार हैं -

लेखक / संपादक	पुस्तक
लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा	श्रीश्रीशंकरदेव आरु श्रीश्रीमाधवदेव
डॉ. महेश्वर नेओग	श्रीश्रीशंकरदेव
नगेन शइकीया	विषय शंकरदेव
द्विजेन्द्र नाथ भकत	कीर्तन एक समीक्षात्मक आलोचना
कालिराम मेधी	महापुरुष शंकरदेवर वाणी
सूर्यकांत हाजरिका	कीर्तन घोषा आरु नाम घोषा
कृष्ण नारायण 'मागध'	शंकरदेव साहित्यकार और विचारक
बापचंद्र महंत	सामाजिक पटभूमि सहित असम के बरगीत असम में भागवत धर्म और शंकरदेव का दर्शन
भूपेन्द्र रायचैधरी	शंकरदेव और तुलसीदास की वैचारिक भावभूमि श्रीमंत शंकरदेव व्यक्तित्व और कृतित्व
नारायण वर्मा	महापुरुष श्रीमंत शंकरदेव

1.6. अध्ययन का उद्देश्यः

भक्ति और शृंगार भारतीय साहित्य की दो प्रमुख प्रवृत्तियाँ रही हैं। विद्यापति और शंकरदेव क्रमशः हिन्दी और असमीया साहित्य के दो हस्ताक्षर रहे हैं। आप दोनों की प्रमुख कृतियाँ क्रमशः 'पदावली' और

'कीर्तन-घोषा' हैं। दोनों ही कृतियाँ भक्तिपरक एवं शृंगार विषयक हैं। अतः विद्यापति कृत 'पदावली' और शंकरदेव कृत 'कीर्तन-घोषा' का अध्ययन विवेचन कर भक्ति और शृंगार की दृष्टि से तुलनात्मक अध्ययन विश्लेषण करना ही प्रस्तुत लघु शोध का मुख्य उद्देश्य रहा है।

1.7. अध्ययन की पद्धति एवं व्यवहृत प्रणालीः

प्रस्तुत शोध के अध्ययन की पद्धति मूलतः विश्लेषणात्मक एवं तुलनात्मक है। साथ ही वर्णनात्मक पद्धति का भी प्रयोग किया गया है। अवतरण एवं ग्रंथ-सूची का प्रस्तुतिकरण MLA (Modern Language Association) पद्धति के आधार पर किया गया है। प्रस्तुत शोध हेतु प्रिंट स्रोतों से प्राप्त मुख्य आधार ग्रंथों 'पदावली' और 'कीर्तन-घोषा' के साथ-साथ हिन्दी, असमीया सहायक ग्रंथों का संकलन कर उनका विचार-विश्लेषण किया गया है। साथ ही पुस्तकालय और इंटरनेट का भी सहारा लिया गया है।

असमीया भाषा में स उच्चारणवाले दो वर्ण है- 'च' और 'छ'। असमीया भाषा में 'स' के लिए कोमल 'ह' का उच्चारण होता है। असमीया के 'स', 'च' और 'छ' इन तीनों वर्णों के लिए हिन्दी लिप्यांतरण में क्रमशः 'स', 'च' और 'छ' रखे गये हैं। हिन्दी भाषा के 'य' वर्ण के लिए असमीया भाषा में दो वर्ण प्रयुक्त हैं- एक का उच्चारण 'य' ही है और दूसरे का उच्चारण 'ज' होता है। असमीया 'य' के लिए हिन्दी में भी 'य' रखा गया है, पर असमीया के 'य' के 'ज' वाले उच्चारण के लिए लिप्यांतरण में 'य़' रखा गया है।